नं. ५०१०

वशी करणादि मन्त्रौषधादि
भाषायाम्

× × ×

पत्र ३ —— सं.

विषय. तन्त्रम् .

✓

दिः

वशीकरणादि मंत्रौषधाभिः भाषायां

५०१०

5010

F. = 3

श्रीगणेशायनमः अथ ओषदी लिख्यते मोथाकी जर मुख मे राखे जाको नाम ले सो
वस्य होय मनशिला गोरचन मोथाकी जर पानी सो वांटी अपने तिलक करे तो जा
को नाम ले सो वस्य होय मोथाकी जर सो नाके सूत्र मे मढाय हात मे पहिरे तो प्राण
सुख पावे अघोरचन बहुत होय मोथाकी जर बगल सो अपने तिलक करे जो देषे
सो स्त्री वा पुरुष सो वस्य होय मंत्र ओं वज्रकर्णे सिवे रुधर रुधर ध्वज वेममादि अमृतं
कुरु कुरु स्वाहा एह मंत्र पढि के हजार जप ओषदी लेइ तो सिद्ध होइ १ तंत्र हरदी मां
ठ ७ तिल ७ जव ७ चाउर ७ गुगुल कील कउी ७ कोयला सात ७ लोह चुन ७ जात सा
त लेने आदित्यवार को सर्व चीज भेली करनी जाके दरवाजे पर तिलक करे सो स्त्री पु
रुष जाको नाम ले तिलक करे स्त्री आवे केकडे का लोहु मेमन सिर्के चोरे अपने अंज
न तो भूमकी गडी वस्तु ढूंढ लेवे अथवा दूकले भिलावा गोंगची अरणी एकत्र करि
के जाकु छुवावे सो कोढी होय खांड दूध पिवावे तो नीका होय हरताल धत्तूरा के बीज
कहस्न एकत्र करि वाटि चूरण करे काहू के मूडमे डारे सो चकु होइ दूध खांड खवावे
तो नीको होइ कारो कुत्ता मरो होय ताकु ले आवे कीरा परे तो वडे से कीरा की विष्टा ले
तिलक करे तो कोउ देखे नहि कडवी तूंबरी के बीज नको तेल काढ नाम पारा को मरदै
मेढासिंगी भाग १२ हाथाजोडी भाग ७ केरकंद भाग चार ४ पानी सो वांटि अपने तरुवा लेप करे
तो पानी मे धरती की नाइ चले सात वार प्रात उठ के मैंरव चौवते सात चुलू पानी मंत्र के पीजिये जा
को नाम ले पीवे सो स्त्री वस्य होय मंत्र ओं नमो कामाक्षी प्रकामीनि अमुकी मे वशं नय मानय स्वाहा जप

ओं नमो ब्रह्म वासिनी रक्षरक्ष ठः ठः ठः इह मंत्र पढिके सात वेर लीजे तीन को कर हाथ बां
धजे दोइ हात मेरा खे चोर चाल्यो जानो होय तो कोइ बोले नहि केल की जर मूंड मे राखे।
नाउ वृक्ष की जर मुंड मे राखे तो तरवार नहि लागे तीन कुं जरे गाय के घी व मे बांटिके पीवे तो
अन्तर देह मन छी... मंत्र अहो कुंभकरण महाराक्षस वेघसी वी सं भूत पसेन भज
ने महाभगवान रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा इह मंत्र अष्टोत्तर शो वार जपिये तो सिद्धि पावे॥
आदित्तवार को पुष्य नक्षत्र मे सिरस वृक्ष की जर लीजे पानी सो घसी तिलक कीजे तो
ताते लोह सेन जरे सर्प काटे तो न मरे ओं नमो आदेस गु० ओं सोल बीर कसोल राई ध्रू
ल को धूपिया मसाण की ताई ईस पिंड कुं का कुर कुरी न चलावतो वीर मसाण की
दुहाई ये हि घडी यही स्याय तप कड पछाउ न पछाउ तो तेरी माता को दूध हराम करेगो
वाचा चूकतो तेरी वन भाने जकी सिज्या चढ रवै सब्द साचा पिंड कांचा फु० यो ह नी
मंत्र ओं गणपती बीर खसे मसाण जो मे मो गुसोत आण पंच लडुं वा सिर सिंदूर त्रि
भुवन मो ग चंपे के फूल अष्टकुली नाग मोहुं नो नाडी बहत्तर को ठा मोहुं इंद्र की बेटी
सभा मोहुं तीन लोक मोहुं आवता आवता इस्त्री मोहुं जाता जाता पुरुष मोहुं डाबे
अंग वसे नरसिंह जीवने क्षेत्रपाल जो आवे मार मार करंता सो जो हि हमारे पाव
पडंता गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फु० पूजा की विधि चांउ घी व गुगुल से व नील क
डी सो होम कीजे तीन से एकावन आहुती दीजे तो सिद्ध होइ इह स्य मंत्र जपे १०८ ओं

सिंगी चले साकरी धुं धुरू डोरा माथे की सिंगी चले कान की मुद्रा चले सालग्राम चले मा
ला सुमरणी चले चले चले मदार ... पान चले झोरव नरसिंगा चले

१

चल० लछमनवीरकी दोहाई चल० गुरू गोरख जती वीरकी दु० चल० सुखदेव जती०
चल० लूना चमारवी० चल० महमदावी० चल० पदुमावती वी० चल० अंजुंठ चंडाल०
चल० चौषठ योगिनीवी० चल० अचरभैरववी० चल० कामरू कामाक्ष्यावी० चल०
वीरवेतालकी दु० चल० विकटनारसिंहवी० चल० सोबावीर० चल० चोरासीपीर
पैगंबर० चल० नवनाथ चोरासी सिद्धो० चल चल चले नहि तो मेरी भक्ति गुरो की श
क्ति फु० ईश्वरो वाचा इति करामाती को मंत्र ५ अथ विधी कार्तिक उनको डोरा कीजे
अष्टोत्तर गांठी दीना सेलकुनको गंडा पांच बार मंत्र सात डोरी करवा कीजे सात पा
नको बीडा दीजे सात उलटे चक्रको दीवा कीजे तो वीर स्फुरे होइ सत्य सांति कचि
त्त राखणो आरोग्यिये दिन एकैस सिंदूर कुंकुम टीका करणो बीरा सात पानको
बीरो भै सा गुगुलकी धूप दीजे दिन २१ तो फुरे होइ सत्य जानिये अग्या वेताल को मं
त्र ओं नमो कालो कायलो हरि अग्या वेताल बीम बीम तोडे नव सर हार फोडे घ
डा उठावडं डः फुरो फुरो श्री आग्या प्रसंन भैसा गुगुल मछरी चेतक नेरन हरिता
ल ल्यो अपनो बछल घर घर खेले श्री अग्या प्रसन्न एककोसकों एककोसखले
दोई को सकुं २ तीन को ३ चार को ४ पांच को ५ छ को ६ सप्त को ७ ७ राजा रावण को छत्र
जाल घंटा जाल मंद्रजाल जाल जाल देवी आनंदी के पुत्र संग चूहकी फावडी गज मो
तिन को हार पद मा पाणी निसरी लंका किया जुहार लंका से कोट समुंदर सी खाई
तो लूणा चमारी के कुंड मे पडे मंत्र साधि दिन एकैस २१ तथा वार आदित्य जाप कीजे अथ
वीचन छांडियेको रो कूंडो १ अछुते पाणी सो भरिये चोरनापगनो मास कूंडा माहे मेलो की

चंदनमंत्रकेटीकादीयेतोसर्वमोहनहोय जपदिन २१ श्वेत गोगचीकीजरलेमुखमे

राखेतोवेरीमुखनाखुले मंत्रः ॐ ह्रीं रक्त चामुंडे कुरु कुरु स्वाहा वशीकरण लोकवसी

करीस्वाहा इहमंत्र अष्टोत्तर सातवारजपेतोसिद्ध होई सनीचरकेदिनाउपासकरी

ईदोरनीजरपान फूलसुपांलिजे उत्तरमुखहोयलीजे छायासुखावजे कूटकनाम

सोठमिरिचिपीपरबराबरीडारिजे ताकीगोली बांधिजेवाकेनामरक्तचंदनपानी

सोघसिजहांलगावेजेसोवस्यहोय पुनः वगोलीऔरदेवछारचंदनवामलयागि

रीचंदनजलसोघसीजाकुंखवावेसोवस्यहोय पुनः वगोलीऔरगोरोचनबरा

बरीलीजे पानीसोघसीअपनेतिलककरेतोजहांजायेताहांकार्यसिद्धहोय मंत्रः

ॐ सर्वार्थसाधिनीस्वाहा पहिलेयहमंत्रहजारवारजपेतोविकार्यसिद्धहोय ॥

चंद्रग्रहणकेदिनश्वेतसर्पाषाकीजरलीजे ताकुं पानीसघसीअपनेनेत्रकोअं

जनकरेतोराजाप्रजासर्ववस्यहोय अंकोलकोतेलकोदीवाबारे पुनः काजरपा

मसाणकीखापरीमलेईसोतेलकेघीवकोकाजरपारे अपनेनेत्रकोअंजनकरे

तोकोईदेखेनाहि पुष्यनक्षत्रमेशनीचरकेदिनतुलसीकीजरलीजे महीसोघ

सीअरुजोलरिकालरकीनाहोयतोहोय वाकोअंजनकरतोभूमकीगडीवस्तदेषे

वापातालकीतरेकीदेषे उचाटनमंत्रः ओंविश्वावसोनमगंधर्वलोचनीनामीलोभामी

लोसतीकरजेतसमेविश्वाव [illegible] हजारवारजपेदश्रांत्राहोम २

रपारातंपरेपादुकागमनंदहिदहीमस्वाहा यहमंत्रकेप्रजाकीजेगुटिकाकी ॥

अथ यक्षिणी साधनं सर्वे यक्षिणी के ध्यान कहते है जो जे सो रूप ध्यान करे वन्हि के
रूप माता के रूप स्त्री के रूप पुत्री के रूप एके स दिन भरि बिहाने सो सांझ लो जपिये
पुनः बिहाने लो जपिये अपने घर मे तो एके स दिन मे संतुष्ट होय सिज्या विरखे अर्द्धरा
त्री विरखे पचीस मोहर आनि देवे मंत्रः ओं वह वह कमल के पिसाचे स्वाहा मानुष के
हाड की मुदरी बनाव जे हात मे पहिरकर सो मणि बांधिये मसाण मे बैठकर एक ल
क्ष मंत्र जपे तो बडी सिद्धि पावे रसायण बतावे परवत को चलावे तो परबत चले अरु
सदा बालक केसी देही रहे आर्बला बढे मंत्रः ॐ ह्रीं मा हामाये स्वाहा दोई लक्ष जपे मंत्र
वेट का मे बैठकर तो पाच सो मनुष कुं भोजन देई नित्य प्रत्य मंत्रः ओं नमो विभ्रमरूपे
विभ्रमं कुरु कुरु स्वाहा ही यह जेह भगवती स्वाहा ३ तलाव की पाल पर रात्री कु जपिये ए
क लक्ष जपे तो नित्य प्रती मोहर देई मंत्रः ॐ नमो महाभगवान समुद्र देहीरतनाधीज
लसुत्रे ही नमोस्तुते स्वाहा ४ एक माटी का महादेव को लिंग बनावजे एक पहर दिन च
ढे दोपहर लो सांझ लो तीन बार पूजा कीजिये मंत्र पूजा मे जप हजार एक १००० एक महि
ना लो जपे तो सुरसुंदरी नाम यक्षणी प्रसन्न होय दारिद्र दूरि करे आर्बला बढावे मंत्रः
ॐ आगछ आगछ सुरसुंदरी स्वाहा ५ हरदी से भूमी लेपिये दिन प्रत्य एक महि ना तांई ॥
पूजा कीजिये तीन पहर रात्री को मंत्र जपिये पूजा प्रत्य हजार मंत्र जपिये अर्द्ध रात्री से जवि
रखे आवे हजार एक मोहर देवे मंत्रः ॐ ह्रीं अनुरागिणी मैथुन प्रिये स्वाहा ६ जाहा तीनवार
भरहतली मे लेप तो तीन लोक की खबर जाने ॥

मंत्र ॐ ह्रीं प्रसन्नभोगवती कर्णपिशाचिनी प्रचंडवेगनी स्वाहा १० आक के फूल की रुई कपा
स वटृक मल के नाल को सूत्र इन की बत्ती कीजे मानस की खोपरी मे काजर पाडेवो काजर दे
जिये मंत्रः ॐ ह्रीं काली काली महाकाली मांससोणितभोजने रसुरवदे देवी ममेयसीतमान
यनि हुं फट् स्वाहा यह मंत्र दश हजार वार जपे तो सिध्य होई ११ मंत्र मिरिच को मिरी चम्री
महाभ्री दिन महादिन २ वावरा वीर पटा भली जाहां वसे उजट घनी जा गुरुजन फला नाम
नी फला नास तेसु रव नाहि बैठे सुफारन देखमे रामुषत वलो न होय फलाना को सुख मोह
त्या गउहत्या अस्त्री हत्याति पाप तेरे सिर चढे जो मेरो हंकारो पाछो फिर ॐ फट् स्वाहा मिरिच
टंक १ मिरिच सात वार मंत्र होमे तो वश्य होय पुष्य नक्षत्र मे नरास्ति की कील आंगुर ४ वार
सात मंत्रिये जेना घर नो नाम ले ज डाटिये तो वश्य होय मंत्रः ॐ ह्रीं म्रीं मर ठः ठः स्वाहा मघा न
क्षत्र मे रम शाण काष्ट की कील आंगुर ४ वार सात मंत्र जेना घर नो लो भर खेत मे गाडे ते आकर्ष
ण यति मंत्रः ॐ ह्रीं हुं ह्रीं लर ठः ठः स्वाहा चित्रा नक्षत्र मे वट काष्ट की कील आंगुर ४ वार ७
मंत्रिये जे नाम ले तेली का घर मे डाटिये तो वश्य भवति मंत्रः ॐ ररर ठः ठः स्वाहा वसीक
लो कुंकुम केसर चंदन गोरोचन कर्पूर गाई के दूध सो घसी अपने तिलक करे तो राजा वश्य
होय ३ मंत्रः ॐ अमुक मे वश्य कुरु कुरु स्वाहा हजार वार मंत्र पहिले जपे ओषदी बनावे
पानी सो घसी जा का नाम ले तिलक करे तो राजा वश्य होय घीव खांड दूध दही मधुक मल
के फूल की पखुरी सो होम करे रात्री के तो चक्रवर्ति राजा वश्य होय इति आषाढयदीवुध

व १२)

३